NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX-A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581-4230
VOLUME 6, ISSUE 2, Feb. -2020

शोधार्थी,

Rakesh Kumar

Research Scholar

निर्देशक

Dr. Narender Kumar

भूगोल विभाग

ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय,

चुरू, राजस्थान

अलवर शहर की नगरीय आकारिकी, आन्तरिक भूगोल व उनके विभिन्न कार्यो में उपयोग का अध्ययन

Abstract

पृथ्वी पर नगर मानव द्वारा निर्मित अधिवास है। नगर का आन्तरिक भूगोल बहुत ही दिलचस्प होता है। इसका आकार बहुत बड़ा होता है। इसलिए ये अपना आन्तरिक भूगोल अलग ही रखते है। यदि हम किसी बड़े शहर को देखे तो हमें उसमें दो मुख्य बाते देखने को मिलती है। एक तो कही रिहायशी इमारतों की अधिकता तो कही पर दूकानों की अधिकता ओर कही पर उद्योगों का जमघट देखने को मिलता है। इस प्रकर शहर का भूमि का अलग–अलग प्रकार से भूमि उपयोग होता हुआ दिखाई देता है। दूसरी और इमारतों का बाहरी स्वरूप और उनका क्रम भी हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। कही–कही पर मकान एक मंजिल के है, कही–कही पर गगन चुम्बी इमारते है तो कही अधिवास सड़कों के किनारे बने हुए है। कही अधिवासों के बीच में उद्योग अवस्थित है। कही–कही मलिन बस्तियों का विकास नगर के अन्दर हो चुका है।

Introduction

उपरोक्त सभी बाते शहर की आकारीकी को बताती है। नगर में हमें औद्योगिक ईकाइयाँ, व्यापारिक क्षेत्र रिहायशी मकान, प्रशासनिक क्षेत्र, पर्यटन क्षेत्र, शैक्षणिक क्षेत्र आदि देखने को मिलते है तो शहर की भूमि पर अपना अतिक्रमण कर लेते है। अर्थात् शहर की भूमि इन विभिन्न प्रकार के कार्यो में बटी होती है। इसके कारण नगर में विभिन्न प्रकार के भूमि उपयोग क्षेत्र बन जाते है। जिनको हम नगरीय क्षेत्र या कार्यात्मक जोन का नाम देते है। इससे हम शहर का भूमि का उपयोग तथा उस पर स्थित अधिवासों की भौतिक संरचना व उनके विभिन्न कार्यो में उपयोग का अध्ययन किया जाता है।

नगरीय आकारीकी का अर्थ नगरों के आकार या स्वरूप के विषय में विवेचना करना है। अंग्रेजी भाषा का Morphologyशब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों Morphy = form अर्थात् आकार (रूप) तथा logos = Discourse अर्थात् विवरण से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है । Discourse on fromआकार के बारे में विवरण। आकारीकी शब्द का प्रयोग मुख्यतः जीव विज्ञान में पादपों व जन्तुओं के रूप तथा संरचना के सम्बन्ध में किया गया है। लेकिन भूगोल में इसका प्रयोग भू–आकृतिक विज्ञान व बस्तियों के भूगोल में किया जाने लगा है। नगरीय आकारीकी के अन्तर्गत नगरों की आकृति व आन्तरिक संरचना का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

डडले स्टाम्प के अनुसार ''यह रूप संरचना तथा विकास का विज्ञान है जो कि रूप पर प्रभाव डालता है। नगरीय आकारिकी के अर्न्तगत नगरों की आकृति व आन्तरिक संरचना का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।''[1]

[1]. Stmp, L.D. : A Glossory of Geographical Terms, 1961, p. 326

आर.ई. मर्फी के अनुसार ''आकारिकी अध्ययन के अन्तर्गत नगरीय क्षेत्रों के स्वरूप सम्बन्धी तत्वों जैसे गलियों व सड़कों की व्यवस्था, भवनों का स्वरूप तथा वास्तव में सम्पूर्ण नगरीय भूदृश्यों का अध्ययन किया जाता है।''[2]

आर. ई. डिकिन्सन के अनुसार– ''नगरीय आकारिकी का सम्बन्ध नगरीय अधिवास की योजना व ढ़ाचें से है जिसे नगर की उत्पत्ति, वृद्धि एवं कार्यो के सन्दर्भ में देखते है व व्याख्या करते है।''[3]

डेविड कर्लाक के अनुसार – ''नगरीय आकारिकी के अध्ययन में नगरों का उनके गली व सड़क व्यवस्था भवनों के स्वरूप और कार्य का भूमि उपयोग के सन्दर्भ में वर्गीकृत और विभेदीकृत किया जाता है।''[4]

ए. ई. स्मेल्स के अनुसार – ''नगरीय आकारिकी नगर के मौलिक स्वरूप, स्थान व भवनो की व्यवस्था से निर्मित नगरीय भू दृश्य के अध्ययन से सम्बन्धित ह।''[5]

भूगोल परिभाषा कोष के अनुसार– ''नगरीय आकारिकी के अन्तर्गत नगर के प्रारूप, आकृति तथा उसकी योजना का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है।''[6]

ओ.पी. सिंह के अनुसार वास्तविक रूप नगर के भीतर पाये जाने वाले भिन्न–भिन्न स्वरूप और संरचनात्मक प्रतिरूप उसकी आकारिकी का परिचय देते है। उनके अनुसार आकारिकी के अन्तर्गत नगर के अन्दर पाये जाने वाली दो प्रकार की विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

i. नगर की भौतिक स्वरूप व व्यवस्था

ii. नगर की आन्तरिक कार्यात्मक संरचना।

---

[2]Murphy, R.E.: The American City, 1961, p. 4.

[3]Dickinson, R.E., The west Europen City, P. 8.

[4]Clark D., Urbon Geography, P. 8.

[5]Mailes, A.E., Geography of Town P. 84.

[6]भूगोल परिभाषा कोष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1977 पृ. 204

डॉ. कुसुमलता के अनुसार "नगर की आकारीकी नगर के कार्यो का प्रतिबिम्ब है। इससे नगर की नियोजना सम्बन्धी बातों तथा निर्मित क्षेत्र के बारे में अध्ययन किया जाता है। इनका नगर के कार्यो पर क्या प्रभाव पड़ा है। तथा नगर के निर्माण का विकास क्रम किस प्रकार का रहा है। आदि सब बातों को नगर के स्वरूप में सामिल किया जाता है।"

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि नगरीय भूगोल में नगर की आकारीकी के अन्तर्गत उसके विभिन्न कार्यो के क्षेत्र, नगर के बसाव स्थान का उसके कार्य–क्षेत्रों व इमारतो पर प्रभाव नगर के आकर पर प्रभाव डालने वाली बातों नगर के बसाव पर मानव के रीति–रिवाजों, तथा संस्कृति का प्रभाव और नगर के विभिन्न कार्यक्षेत्रों की आपसी स्थिति का अध्ययन किया जाता है। समय–समय पर विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग परिभाषाओं से नगरीय आकारीकी के अर्थ का उसके कार्यक्षेत्र का अध्ययन करने का प्रमाण दिया है।

किसी भी शहर की आकारीकी का अध्ययन करने में उन कारकों को अध्ययन किया जाता है जिसके कारण शहर के वर्तमान स्वरूप का विकास हुआ है। इसमें वर्तमान स्वरूप की भौतिक संरचना का अध्ययन भी होता है। तथा शहर के कार्यक्षेत्रों का भी अध्ययन किया जाता है। नगरीय आकारीकी को प्रभावित करने वाले कारकों को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है जो निम्नानुसार है –

i.प्राकृतिक कारक :– इसमें नगर की बसाव स्थिति, बसाव स्थान आदि के सन्दर्भ में नगरीय आकारीकी का मूल्यांकन किया जाता है। यदि नगर का बसाव स्थान समतल और मैदानी है तो नगर का विकास चारों दिशाओं समान रूप से विकसित होगा। जबकि नदी के किनारे या समुद्र के किनारे स्थित शहर के बसाव स्थान से उस शहर की आकारीकी पर विशेष प्रभाव पड़ता है पर्वतीय प्रदेश अथवा पर्वत पदीय स्थिति का भी शहर की संरचना पर बहुत प्रभाव पड़ता है। पर्वतीय क्षेत्रों में धूपदार ढाल की उपस्थिति, जलवायु की दशा, जल की उपलब्धता आदि बातों का भी शहर की आकारीकी पर किसी न किसी रूप में प्रभाव पड़ता है। समतल मैदान सड़कों के

तेज विकास में सहायक होते है। जबकि उबड़–खाबड़ धरातल सड़कों के विकास में अवरोध पैदा करते है। भौतिक कारक सड़कों के विकास पर प्रभाव डालने क साथ–साथ उनके संरचना व प्रारूप पर भी प्रभाव डालते है। नदी किनारे बसे शहरों में सड़के नदी तट के अनुरूप उसके समानान्तर फैल जाती है। अतः स्पष्ट होता है कि सड़कों का विन्यास बसाव स्थान की धरातलीय विशेषताओं का परिणाम होता है। शहर की आकारीकी को प्रभावित करने वाले इन प्राकृतिक कारकों में उच्चावच जलवायु, अपवाह प्रणाली, वनस्पति, मृदा प्रकार आदि को सामील किया जाता है।

ii. सांस्कृतिक कारक :–इसमें नगरवासियों की धार्मिक मान्यताओं रीति–रिवाजों, प्रौद्योगिकी विकास, शैक्षिक स्तर आदि को शामिल किया जाता है। जो नगर की आन्तरिक संरचना और विन्यास को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते है। इसके अलावा परिवहन एवं संचार तन्त्र, औद्योगिक विकास तथा राजनीतिक–सामाजिक संगठन आदि का भी नगरीय आकारीकी पर स्पष्ट प्रभाव देखा जाता है। अनेक प्राचीन नगरों में इमारतों का फैलाव किसी मन्दिर, मस्जिद, राजप्रसाद, या दुर्ग के चारों और देखा जाता है। इसी प्रकार अलवर शहर में भी बाला किला को ध्यान में रखकर बताया गया है।

उपरोक्त नगरीय आकारीकी को प्रभावित करने वाले कारको के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शहर चाहे बड़े हो या छोटे वहां पर कइ प्रकार के आर्थिक खण्ड स्थापित हो जाते है ये खण्ड रिहायशी, व्यापारिक, प्रशासनिक, शिक्षा, मनोरंजन आदि प्रकार के होते है तथा इन सबका विस्तार नगर के बसाव –स्थान व आकारीकी पर निर्भर करता है। ये खण्ड परिवर्तनशील होते है। समय के साथ–साथ में अपनी विशेषता और विस्तार में निरन्तर परिवर्तन करते रहते है।

नगरीय विकस के सिद्धान्तों अथवा नगरीय भूमि उपयोग सिद्धान्त मूलतः एक दूसरे के पर्याय ही है तथा ये सिद्धान्त किसी आदर्श शहर के आन्तरिक विन्यास का समान्यीकृत रूप प्रस्तुत करते है। दूसरे शब्दों में इनके द्वारा शहर के विभिन्न खण्डों की एक–दूसरे के संदर्भ में स्थिति की जानकारी मिलती हैं। किसी भी शहर के

समुचित विकास या उन्हें पुनः व्यवस्थित करने की योजना बनाने से पूर्व हमें उस शहर के वर्तमान भूमि उपयोग का अध्ययन करना आवश्यक है कि किन–किन कारणों से शहर का वर्तमान स्वरूप सामने आया है तथा ऐसी कौन–कौन सी सुविधाएँ वहॉ पर उपलब्ध हैं जिससे वहॉ पर कोई अमुक कार्य विशेष उन्नति कर गया है। यद्यपि प्रत्येक शहर की भीतरी बनावट अनियमित होती है, उनमें कार्यो के मिश्रित क्षेत्र होते है। मानव द्वारा पृथ्वी के उपयोग हेतु शहरी क्षेत्र के मुख्य बिन्दु होते है। शहर की आर्थिक व सामाजिक आवश्यकताओं के कम में शहर एक निश्चित प्रतिरूप विकसित करते है। किसी भी शहर में भूमि उपयोग के विस्तार व अवस्था को सामान्यीकृत करने के लिये अनेक सिद्धान्त है। नगरीय भूगोल की शाखा के अन्तर्गत शहर के भीतर भूमि उपयोग एवं संरचना के बारे में प्रस्तुत शोध कार्य में मुख्यतया निम्न तीन सिद्धान्तों द्वारा बतायी गयी व्यवस्था के अनुसार अध्ययन को वर्गीकृत कर अध्येपित किया है।

संकेन्द्रीय वलय सिद्धान्त

संकेन्द्रीय वलय सिद्धान्त का प्रतिपादन 1927 में अमेरिकी समाजशास्त्री बर्गेस ने किया था। अमेरिका के शहरों, विशेष रूप से शिकागो शहर के अध्ययन पर आधारित उनके इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी शहर का केन्द्र से बाहर की ओर विस्तार अरीय रूप में होता है जिसमें संकेन्द्रीय वलयों की एक श्रेणी बन जाती है। बर्गेस महोदय के इस सिद्धानत के अनुसार किसी शहर का केन्द्र से बाहर की फैलाव अरीय रूप में पॉच संकेन्द्रीय वलयों के रूप में पाया जाता है। नगर के विकास के साथ–साथ ये पेटियॉ बाहर की ओर खिसकती जाती है। बर्गेस के अनुसार प्रत्येक पेटी में एक विशिष्ट प्रकार का भूमि उपयोग पाया जाता है। इन पेटियों का विवरण निम्नानुसार है –

प्रथम पेटी – आन्तरिक या केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र

नगर के केन्द्र में स्थित इस पेटी में व्यापारिक कियाओं, यातायात आदि का सर्वाधिक घनत्व पाया जाता है। यह प्रत्येक शहरका कोर क्षेत्र होता है अलवरशहर में

भी यह क्षेत्र वास्तविक रूप से खुदरा व्यापार क्षेत्र, हल्के विनिर्माण और व्यापारिक मनोरंजन की सुविधा वाला है। जो शहर जितना बड़ा होता है उसका केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र भी उतना ही विस्तृत होता है। इस भाग में भूमि का मूल्य सर्वाधिक होता है तथा स्थान के अभाव में यहॉ बहुमंजिली इमारतों की प्रधानता पाई जाती है। दुकानें, व्यापारिक प्रतिष्ठान, कार्यालय, बैंक, थियेटर, होटल आदि इसी पेटी में स्थित होते है। सड़को और यातायात मार्गो मे अतिक्रमण के कारण दिन में इस क्षेत्र में सर्वाधिक भीड़–भाड़, कय–विकय एवं कोलाहल देखा जाता है, परन्तु रात्रि के समय यह क्षेत्र शान्त एवं निर्जन सा दिखलाई पड़ता है। इसका अधिकांश भाग अरिहाइशी होता है। अलवरशहर के सन्दर्भ में यदि इस सिद्धान्त के अनुसार दृष्टिपात किया जावे तो शहर की चारदीवारी क्षेत्र के मुख्य बाजार व अन्य आन्तरिक बाजार इस पेटी में आते हैं।

द्वितीय पेटी – संकमण क्षेत्र

यह केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र के चतुर्दिक स्थिति आवासीय ह्रास का क्षेत्र होता है, जिसमें हल्के उद्योगों एवं सीबीडी के व्यापारिक प्रतिष्ठानों का अतिकमण देखा जाता है। यह क्षेत्र औद्योगिक एवं व्यापारिक क्षेत्र के मध्य का क्षेत्र होता है, जिसका अतिकमण इन दोनो क्षेत्रों द्वारा ही किया जाता है इसीलिए इसे संकमण क्षेत्र कहा गया है। इस क्षेत्र को उसके भूमि उपयोग व बदली हुई विशेषता के आधार पर आसानी से पहचाना जा सकता है। नगर में रहने वाले बुजुर्ग व्यक्तियों के मकान, पुरानी बनावट के मकान, कमरों का किराये पर सुलभ होना, कम आमदनी वाले लोग, गन्दे मकान व गलियॉ यहॉ पर देखने को मिलती है। अलवरशहर के सन्दर्भ में भी संकमण क्षेत्र की पेटी यद्यपि दृष्टिगोचर होती है, अर्थात् वलयाकार नहीं होकर अनियमित स्थिति में उपरोक्त परिस्थितियॅा बनती है।

तृतीय पेटी – श्रमिक लोगों के रिहाइशी मकानों का क्षेत्र

यह क्षत्र संकमण पेटी को चारों ओर से घेरे रहता है। यह देखने में संकमण पेटी से भी अच्छा लगता है। यहॉ पर उद्योगों में काम करने वाले श्रमिक रहते है।

ये लोग संकमण पेटी में तो रहना पसन्द नहीं करते लेकिन नगर के भीतरी भाग के पास में ही रहना पसन्द करते हैं ताकि वे नगर में अपने काम करने के स्थान पर आसानी से पहुॅच सकें। यहॉ पर मध्यम श्रेणी के लोगों के मकान कम देखने को मिलते है। यहॉ ऐसा देखने में आता है कि परिवार के बडे सदस्य कारखानों में काम करते हैं जबकि उनके बेटे–बेटियॉ केन्द्रीय व्यापारिक क्षेत्र (CBD) में काम करने जाते है। अलवर शहर मे उक्त स्थिति परिलक्षित नहीं होती है क्योकि शहर में औद्योगिक स्थिति केन्द्र में ना होकर मुख्य भागों व शहर के परिधि क्षेत्र के सहारे सहारे अवस्थित है अतः मेखला या वलय वाली स्थिति नहीं बनती है।

चतुर्थ पेटी – श्रेष्ठतर रिहायशी मकानों का क्षेत्र अथवा मध्यम श्रेणी के लोगों का आवासीय क्षेत्र

यह पेटी श्रमिक लोगों के रिहायशी मकान की पेटी के बाहर विस्तृत रूप में फैली है जहॉ पर व्यावसायिक कार्यो में लगे लोग रहते हैं, जिसमें छोटे–छोटे व्यापारिक संस्थानों के मालिक, मैनेजर, क्लर्क आदि हैं। यहॉ होटल व इमारतें भी देखने को मिलती हैं। मकानों के आगे काफी बड़ा खुला क्षेत्र होता है जिसका प्रयोग बाग–बगीचे के रूप में होता है।

पंचम पेटी – नगर को अभिगमन करने वालों का क्षेत्र

यह नगर की बाहरी पेटी होती है जिसमें स्थित उपनगरीय क्षेत्रों तथा अनुषंगी नगरों के साथ अभिगमन होता रहता है। कुछ विद्वानों ने इस बाहरी पेटी की बस्तियों को शयनागार नगर का नाम भी दिया है क्योंकि ये शहर में काम करने वाले लोगों को रात में आश्रय प्रदानकरती हैं और दिन में ये लोग शहर में काम करने जाते है। शहर की इस पेटी में भी तेज यातायात साधनों की सुविधा के साथ उच्च श्रेणी के रिहाइशी मकान भी देखने को मिलते है। अलवरशहर के अन्तर्गत भी शहर के बाहरी क्षेत्र यथा जयपुर रोड, दिल्ली रोड व भरतपुर रोड के समीप इसप्रकार के उपनगरीय क्षेत्र या अनुषंगी नगर धीरे–धीरे बनने लगे है।

बर्गेस के अनुसार शहर के केन्द्र स्थल (लूप) से समीपवर्ती क्षेत्रों की ओर जाने पर पुरूष–महिला अनुपात, अपराध की दरें, तथा शहर से बाहर जन्म लेने वाले लोगों का प्रतिशत कम होता जाता है जबकि ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जाती है जो स्वयं के मकानों में रहते है।

बर्गेस ने अपने सिद्धान्त के बारे में यह भी बताया कि संकेन्द्रीय वलय सिद्धान्त (मॉडल) भूमि की रचना, मार्गो तथा ऐसे ही अन्य कारकों द्वारा परिवर्तित भी हो सकती है। भीतरी पेटी अपने से बाहर की दूसरी पेटी में अपनी नयी बस्तियॉ बसाकर प्रसार कर लेती है। इसीलिए किसी शहर का प्रसार मुख्यतः अरीय प्रतिरूप में होता है।

बर्गेस महोदय का संकेन्द्रीय वलय मॉडल एक आदर्श विचारधारा है। किसी भी शहर में उसकी यह योजना पूर्णरूप से लागू नहीं होती है। धरातलीय रूकावटें जैसे नदियॉ, झीलें, पहाड़ियॉ हिमनद, आदि नगर के क्षेत्रीय ढॉचे को बिगाड़ देती है। यातायात मार्ग जैसे कि रेलमार्ग, मोटर मार्ग (सड़क मार्ग) आदि भी इस ढॉचे को छोट–छोटे भागों में बॉट देते है।

References

1. अग्रवाल एन.एल.(1999) : भारतीय कृषि का अर्थतंत्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
2. अग्रवाल एम.डी. एवं ओ.पी. गुप्ता, (2011) : भारत में आर्थिक पर्यावरण, रमेश बुक डिपो, जयपुर
3. अली मोहम्मद (1980) : कृषि उत्पादकता के स्तर में प्रादेशिक असंतुलन
4. अनिता एच.एस.(2012): एग्रीकल्चरल मार्केटिंग, मंगलदीप पब्लिकेशन्स, जयपुर
5. एस्टोन, जे. और एस. जे. रोगर्स(1967) : इकोनोमिक चेन्ज एण्ड एग्रीकल्चर, एडीनवर्ग – ओलिवर एण्ड बोयड
6- बघेल, महिपाल सिंह व रामोतार पोरवाल(1991) : आधुनिक कृषि विज्ञान, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर